डॉ. बिभा कुमारी,

हिन्दी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर

बीए प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

अरी वरुणा की शांत कछार का केंद्रीय भाव

ज्यशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी-साहित्य के छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-

'पथिक' 'झरना' 'आँसू' 'लहर' 'कानन-कुसुम' और 'कामायनी' इत्यादि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। 'झरना' 'आँसू' और 'लहर' इत्यादि उनके छायावादी भावबोध का प्रतिनिधित्व करने वाली रचनाएँ हैं। इनका काव्य शैव-दर्शन से प्रभावित हैं, जिसका मूल भाव, आनंद और समरसता की प्राप्ति है।

'अरी ओ वरुणा की शांत कछार' कविता 'लहर' में संकलित है, यह वर्णात्मक प्रगीत है। महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में जो उपदेश दिया था, उसका अत्यधिक महत्व है। महानिर्वाण की प्राप्ति के पश्चात उन्होने सारनाथ से सम्पूर्ण विश्व को मानवता का संदेश देने का शुभारंभ किया था। वरुणा नदी की शांत-कछार, दुनिया के दुखों से, तापों से, आधी-व्याधि से ग्रस्त, दुखी प्राणियों की शरणस्थली रही है। अनेक ऋषि-मुनि,तपस्वी एवं दर्शनशास्त्री इस पवित्र भूमि के आध्यामिक वातावरण में बैठते थे। विभिन्न दर्शन एवं सिद्धांतों पर विचार-विमर्श करते थे। समस्त विश्व के मानव के कल्याण की सोचते थे, सबकी भलाई का मार्ग निकालते थे। कवि जयशंकर प्रसाद वरुणा नदी के कछार के उस अलौकिक वातावरण का सजीव चित्रण करते हैं, साथ ही महात्मा बुद्ध के वैराग्य को भी पाठकों के समक्ष साकार कर देते हैं। महात्मा बुद्ध ने कपिलवस्तु के अपार ऐश्वर्य, माता-पिता के वात्सल्य, पत्नी और पुत्र के मोह इत्यादि सांसरिक सुखों का परित्याग कर दिया था। उन्होंने अपनी कठिन तपस्या से सत्य की खोज की, ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात प्राणियों के कल्याण हेतु वरुणा नदी के तट से उपदेश देना प्रारंभ किया।

सारनाथ की यह भूमि शांत और पवित्र भूमि है। इसकी पवित्रता का चित्रण कवि ने अपनी कविता में अत्यंत जीवंतता से किया है। वरुणा नदी के शांत तट पर शीतल जल की धारा और विद्वानों के शीतल उपदेश से मनुष्य के दैहिक- दैविक ताप सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं।